असम वैली स्कूल

हिंदी विभाग त्रैमासिक पत्रिका

उड़ान

अभिव्यक्ति की....

सत्रांक – जून 2021

माँ

माँ ने हमको जन्म दिया,
पाल-पोसकर बड़ा किया।

चलना-फिरना हमें सिखाया,
तूफ़ानों से लड़ना सिखाया।

माँ के सबसे मीठे बोल,
दुनिया में सबसे अनमोल।

खाना हमको वही खिलाती,
लोरी गाकर हमें सुलाती।

मेरी खुशी में खुश हो जाती
दर्द हमें हो, वह रो जाती।

माँ हमको है बहुत ही भाती,
वह हमको है रोज पढ़ाती।

माँ की ममता एक वरदान,
माँ के रूप में वह भगवान।

भाव्या चन्दक
कक्षा – पाँचवीं

बादल

बादल घने आसमान में रहते,
रंग में सफ़ेद या काले होते।
गरज-गरज कर पानी देते,
पेड़-पौधों की प्यास बुझाते।
सूरज की गर्मी से पानी ऊपर जाता,
बादल बनकर आसमान में छा जाता।
भारी होकर नीचे वह पानी बरसाता,
बादल जन-मानस को है खूब लुभाता।
नाच रहें हैं सभी धरा पर,
बादल के गर्जन को सुनकर।
फूल भी हँसते हैं, खूब खिल-खिलकर,
सभी मनाएँ खुशियाँ, आओ मिल-जुलकर।

जिगनाशा बोरा
कक्षा - पाँचवीं

चेतावनी

ये कटते हुए पेड़, यह उड़ता हुआ धुआँ,
ये बढ़ती हुई आबादी, यह सूखता हुआ कुआँ,
सब के सब दे रहे, मानव जाति को सचेत होने की दुआ।
कहती है ये बेज़ुबान सृष्टि,
हटा लो ऐ निर्दयी मनुष्य अपनी प्रलयकारी दृष्टि।
कर दो तुम हम पर यह एहसान,
करना सीखो तुम प्रकृति का सम्मान।
यह प्रलय तो कुछ भी नहीं तुम्हारी करनी के आगे,
टूटते जा रहें हैं प्रकृति और मानव के बीच बँधे धागे।
हमने तो तुम्हें अपना सर्वस्व दिया,
पर बदले में तुमने हमें बर्बाद किया।
कहाँ हैं वे चहचहाती चिड़ियाँ ?
कहाँ हैं वे हँसती वादियाँ ?
तुम्हारे स्वार्थ में सब हो रहें हैं नष्ट,
अब तबाही दूर नहीं, यह भी है स्पष्ट।
अब भी है समय, नहीं है सब बिगड़ा,
संभल सको तो संभल जाओ,
अब और समय न गँवाओ।
शीघ्र ही यह बात समझ लो तुम,
ना समझे तो सब-कुछ हो जाएगा गुम।
तुम्हारे लिए ही हम हैं बहुत चिंतित,
कहीं आने वाले कल से, न रह जाओ तुम वंचित।

नमन टिबरीबाल
कक्षा – नवमीं

वक़्त

देखते ही देखते वक़्त बदल जाता है,
आकाश में चमकता सूरज भी डूब जाता है।
सूरज के छिपते ही तस्वीर पलट जाती है,
अँधेरे की कालिमा चहुँ ओर नज़र आती है।
वक़्त की यह अजीब-सी फितरत,
जो मुझे आज तक भी समझ में न आई।
अच्छी खासी चलती ज़िंदगी में भी,
अचानक ही आ जाती है तनहाई।
ज़िंदगी का अकेलापन ही हमको,
लड़कर जीतने का हौसला देता है।
एक घनी काली रात के बाद ही,
पूरा चाँद उभरकर ऊपर आता है।
नीरस और बेजान-सी ज़िंदगी में,
खुशियों का प्रकाश फैलाता है।
क्यों न छोड़ दें हम ? निराशा की बातें,
खुद ही खोज लें कुछ, आशा की बातें।
जानें भी दें हम वो बीते हुए लम्हें,
कब तक रहेंगे यूँ चिंता में सहमें।
अगर धैर्य होगा, तो अच्छा ही होगा,
नहीं तो, ज़िंदगी से शिकायत रहेगी।

हमराज सिंह जस्सल
कक्षा – बारहवीं

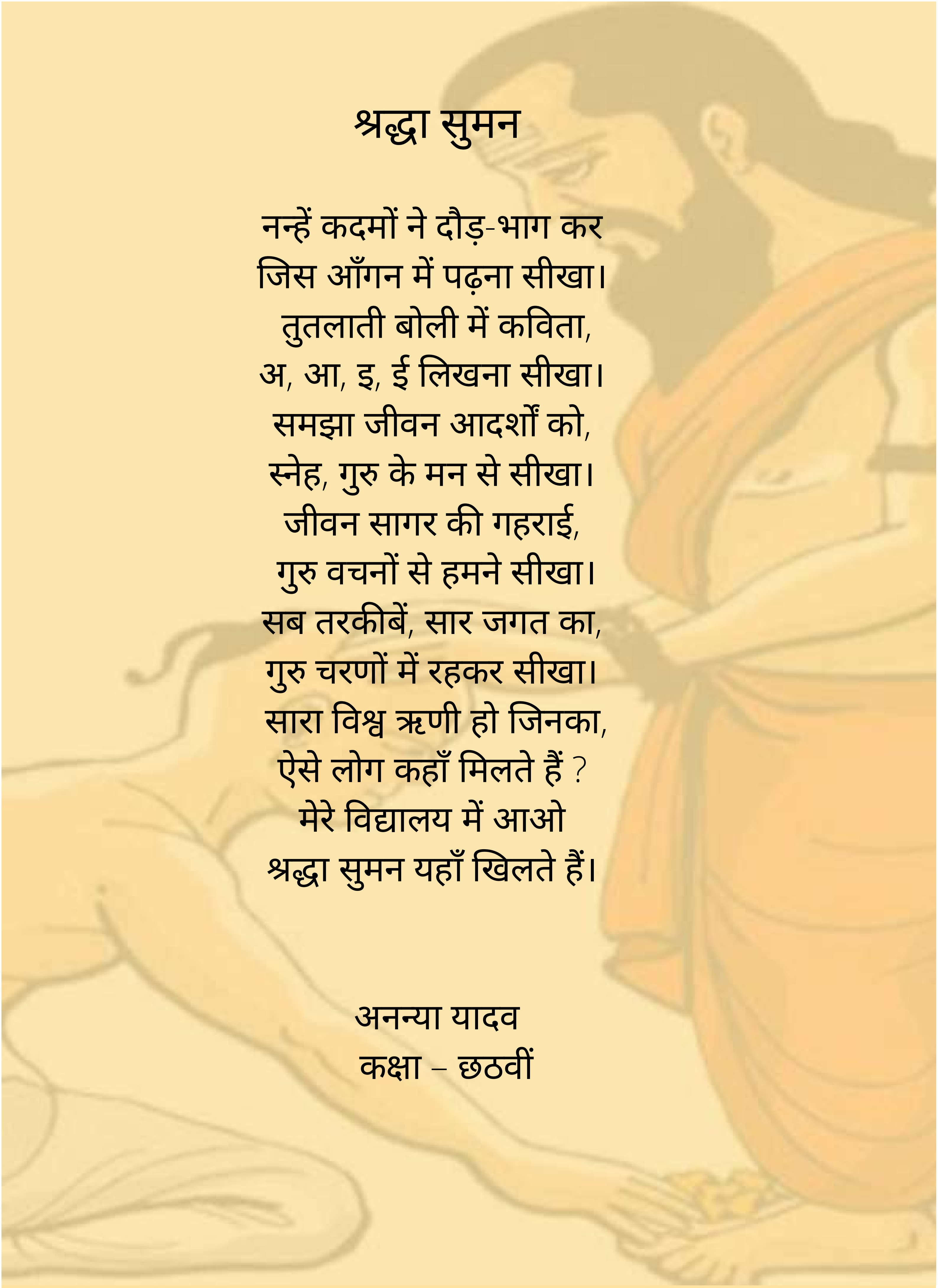

श्रद्धा सुमन

नन्हें कदमों ने दौड़-भाग कर
जिस आँगन में पढ़ना सीखा।
तुतलाती बोली में कविता,
अ, आ, इ, ई लिखना सीखा।
समझा जीवन आदर्शों को,
स्नेह, गुरु के मन से सीखा।
जीवन सागर की गहराई,
गुरु वचनों से हमने सीखा।
सब तरकीबें, सार जगत का,
गुरु चरणों में रहकर सीखा।
सारा विश्व ऋणी हो जिनका,
ऐसे लोग कहाँ मिलते हैं ?
मेरे विद्यालय में आओ
श्रद्धा सुमन यहाँ खिलते हैं।

अनन्या यादव
कक्षा – छठवीं

न जानें क्यों ?

न जानें क्यों, इन बदलते हुए हालातों में,
बदल गए लोगों के जज्बात भी।
वादे करते थे, जो हमसफ़र बनने के,
ज़िंदगी में उलझकर, वो भूल गए हमें भी कहीं।
न रही ज़रूरत अब उनके मतलबों की,
न रही चाह अब वापस मिलने की।
ज़िंदगी की इस कठोर धूप-छाँव में,
शीतल-सी छाया लाया था कोई।
आज हँसता है वही, मेरी नादानियों पर,
जो कल तक दाद देता था, मेरी कहानियों की।
ज़िंदगी ने मुद्दतों के बाद, आज तरस खाया है,
मेरे सुनसान जीवन में, फिर से कोई आया है।
बीते हुए पलों का एहसास दूर करना है,
ऐ मेरे दोस्त, अब मुझे साथ तेरे चलना है।

समर मजूमदार
कक्षा - बारहवीं

क्या आप जानते हैं ?

1- महान गतितज्ञ पाइथागोरस अपने बचपन में जंगल में लकड़ियाँ काटते और उन्हें बेचकर अपना और अपने माता-पिता का भरण-पोषण करते थे।

2- ईरान का बादशाह नादिर शाह एक गड़रिये का बेटा था। भेड़ चराते हुए उसका जीवन व्यतीत हुआ।

3- अमेरिका का करोड़पति जॉन बोन मेकर पहले एक दुकान में 200 रुपए में नौकरी करता था।

4- संत कबीर एक मामूली जुलाहे के घर में पाले-पोसे गए थे और बड़े हुए तो सूत के कपड़े बनाने लगे।

5- विश्व विजेता नेपोलियन बोनापार्ट पहले फौज का मामूली सिपाही था।

6- बंगाल का गवर्नर जनरल लार्ड क्लाइव पहले इंग्लैण्ड के दफ्तर में एक छोटा-सा कलर्क था ।

बबली कंवर
कक्षा- आठवीं

इच्छा [एक लघु कहानी]

एक बार एक मधुमक्खी ने बहुत मेहनत से एक बरतन में शहद इकट्ठा किया और भगवान को प्रसन्न करने के लिए उनके सामने वह बर्तन रख दिया। भगवान उस शहद को देखकर बहुत प्रसन्न हुए और मधुमक्खी से बोले कि वह जो चाहे वह वरदान उनसे माँग सकती है। हम उसकी इच्छा को अवश्य पूरा करेंगे। मधुमक्खी यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई और बोली- "हे सर्वशक्तिमान प्रभु, यदि आप सचमुच मेरी मेहनत से प्रसन्न हैं, तो मुझे यह वरदान दें कि मैं जिसे भी डंक मारूँ, वह दर्द से छटपटा उठे। मेरा वार कभी खाली न जाये।" भगवान मधुमक्खी की यह इच्छा जानकर बहुत क्रोधित हुए और बोले - तुम इतना अच्छा शहद बनाना जानती हो तो फिर डंक मारकर लोगों को कष्ट क्यों पहुँचाना चाहती हो ? लोगों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? तुम फूलों से रस लेती हो क्या वे तुम्हें नुकसान पहुँचाते हैं ? लेकिन मधुमक्खी अपनी इसी इच्छा पर अड़ी रही। भगवान पुनः उससे बोले- "क्या इसके अतिरिक्त तुम्हारी अन्य कोई इच्छा नहीं है ?" मधुमक्खी बोली "नहीं, मेरी अन्य कोई इच्छा नहीं है।" भगवान बोले -"ठीक है, मैंने वादा किया है कि तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा, परंतु एक शर्त है। वह यह कि तुम जिसे डंक मारोगी उसे तो बहुत दर्द होगा, परंतु तुम भी तुरंत मर जाओगी।" यह कहकर भगवान वहाँ से चले गए। अब मधुमक्खी को अपनी बात पर पछतावा होने लगा। वह बहुत गिड़गिड़ाई पर भगवान वहाँ नहीं आए। इस कहानी से हमें यह यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपनी योग्यता पर कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए और हमेशा दूसरों का भला सोचना चाहिए। इसी में हमारा बड़प्पन है।

शांभवी चौहान
कक्षा 5B

बरसात का वह दिन

बरसात का दिन मुझे बेहद प्रिय है। चारों तरफ बहती ठण्डी-ठण्डी हवाएँ, पानी की बौछारें, तन और मन दोनों को आह्लादित कर देती हैं। बरसात का मौसम इंसान को ही नहीं पशु-पक्षी, जीव-जंतु और वनस्पतियों को भी प्रसन्न ही नहीं करता बल्कि उनमें प्राण भी फूँक देता है। किसानों के मन में बरसात से अच्छी फसल पैदा होने की उम्मीद होती है। बाग-बगीचे के वातावरण को सुगंधित कर देती है। हर तरफ खुशहाली का आलम दिखाई देता है। छुट्टियों में एक दिन मैं घर के दलान में बैठा हुआ था कि अचानक से काले-घने बादल घिर आए और घनघोर बरसात होने लगी। मैं उस मौसम को देखकर बेहद खुश हो रहा था। मैंने सुनहरा मौसम देखकर अपनी माँ को पकौड़े और चाय बनाने के लिए कहा। माँ ने मेरा मन देखकर हम सभी के लिए गरमागरम चाय-पकौड़े बना दिए। हम सभी बरामदे में बैठकर चाय और पकौड़ों का आनंद लेने लगे। मैं खाने-पीने का बहुत ही शौकीन हूँ। जब तक दूसरे लोग एक पकौड़ा उठाते तब तक मैं दो-तीन सफाचट कर जाता था। माँ यह सब देखकर मन ही मन बहुत खुश हो रही थीं। मेरा ध्यान बरसात की ओर था। आज मुझे बरसात का एक अलग रूप ही दिखाई दे रही थी। बरसात में पानी की धार बहुत ही तेजी से नीचे गिर रही थी। आज बरसात के समय हवा भी बहुत तेज थी। ऐसा लग रहा था कि जैसे हवाएँ गिरती पानी की बूँदों को धकेल कर हमारे घर के अंदर फेंकना चाह रही हैं। थोड़ी देर में घर के बगीचे में लगा अर्जुन का पेड़ धड़ाम से नीचे गिरा। हम सब चौंक गए। हमने अपनी कुर्सी-मेजों को कमरे के अंदर कर लिया।

आज बरसात का ऐसा भयानक रूप देखकर बहुत भय लग रहा था। बादलों में बिजली तड़क रही थी, तेज हवाएँ चल रही थीं और पानी भी ऐसे गिर रहा था कि जैसे रुकने का नाम ही नहीं लेगा। उस दिन की बारिश को देखकर मुझे ऐसा आभास हुआ कि जिस बरसात को मैं इतना पसंद करता हूँ, वह इतनी भयानक भी हो सकती है। शाम के समय जब बरसात कुछ हल्की हुई तो मुझे पता चला कि आज की तेज हवाओं और भयानक बारिश के कारण शहर में कई पेड़ उखड़ गए और बिजली के खंभे भी गिर गए थे। ऐसी भयानकता का कारण मुझे प्रकृति के साथ मनुष्य का ही खिलवाड़ लगता है। लोग प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुध दोहन कर रहे हैं जिसके कारण प्रकृति का स्वरूप भी विनाशकारी होता जा रहा है। इस भयानक घटना को देखकर, मैं यही समझ पा रहा था कि यदि हम प्रकृति का सम्मान करें, तो यह भी हमारा सम्मान करेगी अन्यथा.....।

चेन्मई चैंग
कक्षा – आठवीं

कलाकार

जोया एक बहुत ही शांत, सुशील और होनहार लड़की थी। कोरोना महामारी के कारण बच्चों की पढ़ाई में काफी नुकसान हुआ। वे काफी समय तक विद्यालय नहीं पहुँच पाए जिसके कारण पढ़ाई में आने वाली समस्याओं ने उनको पढ़ाई में और पीछे ढकेल दिया। जोया की पढ़ाई का भी काफी नुकसान हुआ जिसके कारण उसे पढ़ाई में दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था। जोया ने अभी एक वर्ष पहले ही इस विद्यालय में प्रवेश लिया था जिसके कारण अभी उसके दोस्त भी नहीं बन पाए थे। जैसे ही समय थोड़ा अनुकूल हुआ और विद्यालय खुला, जोया ने अपनी पढ़ाई पर जोर लगाना शुरू कर दिया।

वह रोजाना अपनी कक्षा में शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं से अपने जिज्ञासापरक प्रश्न पूछती लेकिन शिक्षकगण उसके प्रश्नों से तंग आ गए थे। उनको लगता था कि वह उनका मजाक उड़ाने के लिए ऐसे बेढंगे प्रश्न पूछती है। वे सब उसे डाँटकर चुप करा देते। उसकी जिज्ञासा धीरे-धीरे दम तोड़ने लगी। प्रश्नों की बौछार करने वाली जोया चुपचाप रहने लगी। कक्षा में उसके कोई दोस्त नहीं थे, इसलिए उसने किताबों को अपना दोस्त बना लिया और वह अधिकांश समय किताबों के अध्ययन में लगाने लगी।

एक दिन कक्षाओं के बीच मध्यांतर की घण्टी बजी। सभी बच्चे कक्षा से बाहर निकलकर खेलने और खाने लगे। जोया कक्षा में ही चुपचाप बैठकर किताब पढ़ रही थी। इतने में उसकी निगाह आगे वाली मेज पर गई, जहाँ एक कागज़ रखा हुआ था। जोया ने वह कागज़ उठाकर देखा तो उसमें एक कहानी लिखी हुई थी। वह कहानी अधूरी और अस्पष्ट थी। जोया ने उस कागज़ को उठाया और कहानी पूरी करके कागज़ को वापस उसी जगह रख दिया। वह कागज़ माया का था। मध्यांतर से लौटने के बाद माया ने अपना कागज़ उठाया और घर चली गई। अगले दिन माया को कहानी लेखन प्रतियोगिता में भाग लेना था। कागज़ पर लिखी हुई कहानी माया ने प्रतियोगिता में सुनाई तो उसे उस कहानी के लिए प्रथम पुरस्कार मिला।

अगले दिन कक्षा में हिंदी अध्यापिका ने माया की कहानी की जमकर तारीफ की। माया ने सबसे पूछना शुरू किया कि इस कागज़ पर लिखी अधूरी कहानी को किसने पूरा किया ? कोई उत्तर नहीं मिल रहा था। इतने में माया की नज़र जोया पर गई जो सिर नीचा किए बैठी थी। माया समझ गई कि यह सब जोया ने ही किया है। उसने दौड़कर जोया को गले से लगा लिया। उसी दिन से माया और जोया में गहरी मित्रता हो गई। धीरे-धीरे जोया की प्रतिभा का सभी को पता चला और उसकी बहुत सारी लड़कियाँ मित्र बन गईं। कक्षा में उसका मान-सम्मान होने लगा और अध्यापकगण भी उसकी तारीफ़ करने लगे। जोया को उसकी कला का भरपूर सम्मान मिलने लगा था।

लावन्या अधिकारी
कक्षा - दसवीं

क्रिकेट टूर्नामेंट

असम वैली स्कूल में दिनांक 12-5-21 से दिनांक 22-5-21 तक एक क्रिकेट मैच श्रृंखला का आयोजन किया गया। इस टूर्नामेंट में पहली बार विद्यालय के सभी विभागों की टीमों ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। इस टूर्नामेंट का उद्देश्य कोरोना महामारी के समय कठिन परिस्थितियों के तनाव को कम किया जाए और कार्यस्थल पर एक बेहतर सहयोगपूर्ण वातावरण का निर्माण किया किया जाए। इस मैच से हमने एक-दूसरे की खेल प्रतिभा को पहचाना। मैच के दौरान कई ऐसे खिलाड़ियों से भी परिचय हुआ जो इस क्षेत्र में पहले भी अपना बेहतर प्रदर्शन कर चुके हैं। खेलों का हम सब के जीवन में बहुत ही महत्व है। एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खेलकूद आवश्यक हैं।

इस मैच में कुल पाँच टीमों ने भाग लिया। जिनके विवरण इस प्रकार हैं।

1- FNB टाइगर्स – कप्तान- श्री नवीन झा

2- AVS रायल्स – कप्तान – श्री तापस दास

3- AVS सुपर किंग्स- कप्तान- श्री देवेंद्र वर्मा

4- State लायन्स - कप्तान – श्री सोरन दत्ता

5- Mighty डे स्कालर- कप्तान – श्री सूरजदीप सिंह

इन मैचों का दोपहर के बाद आयोजन किया गया। आयोजक श्री राजेंद्र चौहान जी ने मैच में सभी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानकों का विशेष रूप से ध्यान रखा। सबसे सुखद बात यह भी रही कि इन मैचों को देखने के लिए विद्यालय परिवार के सभी सदस्य उपस्थित रहे। दर्शक दीर्घा में भीड़ अंत तक देखने को मिली । कई बार कुछ दर्शक, खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन के लिए गाजे-बाजे के साथ भी उपस्थित थे।

इस टूर्नामेंट में सभी टीमों ने एक दूसरे के साथ अपने-अपने मैच खेले। अंकों के आधार पर फाइनल में **FNB** टाइगर्स और **AVS** रायल्स पहुँचे। दोनों टीमों का मैच अंत तक बड़ा ही रोमांचक रहा। यह कह पाना बड़ा कठिन हो रहा था कि कौन-सी टीम जीतेगी। दर्शकों में भी उत्साह बना रहा। अंत में विजय **AVS** रायल्स को मिली।

मैच के निम्नलिखित परिणाम रहे-

टूर्नामेंट में उत्तम गेंदबाज – श्रीमान संजय शर्मा

उत्तम क्षेत्र रक्षक – श्रीमान जयंता बोरा

उत्तम बल्लेबाज - श्रीमान मोहन नासो

(संयुक्त रूप से) - श्रीमान मुकुन्द माधव शुक्ला

कार्यक्रम के समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कक्षा बारहवीं की छात्रा अनुष्का जोशी उपस्थित रहीं। उन्होंने सभी खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. विधुकेश विमल ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस क्रिकेट प्रतियोगिता की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इस टूर्नामेंट में पद को पीछे छोड़कर खेल को महत्त्व दिया गया। क्रिकेट टूर्नामेंट के आयोजक श्रीमान राजेंद्र चौहान जी ने सभी खिलाड़ियों, दर्शकों और सहयोगियों को धन्यवाद किया।

संजय कुमार दीक्षित, हिंदी विभागाध्यक्ष

नीचे दी गई वर्ग तालिका में से रामायण के **44** पात्रों के नाम खोजिए :

दिशा संकेत - ⇩ ⇘ ⇙

सु	ती	क्षण	अ	बा	ली	सी	ता	नी	न
अं	ह	द	ह	अ	सु	मं	त्र	ड़	ल
जा	कौ	श	ल्या	हि	थ	षे	दो	क्ष्म	का
म्ब	प	र	शु	रा	म	कै	ण	द	ता
व	न	थ	ल	व	कु	श	के	रा	री
न्त	वि	भी	ष	ण	ब	त्रु	व	यी	त्र
सु	श्वा	शा	मा	री	च	घ्न	ट	सु	ज
ग्री	मि	न्ता	ण्ड	गु	ह	नु	मा	न	टा
व	त्र	त्रा	वी	भ	र	त	क	य	यु
व	शि	ष्ठ	उ	र्मि	ला	मे	घ	ना	द

प्रिय पाठकगण,
आप उपर्युक्त तालिका में से रामायण के 44 पात्रों के नाम खोजकर, समस्त नाम पत्रिका प्रकाशक को अपना नाम और पते के साथ भेज सकते हैं। पहले पाँच प्रेषकों के नाम पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।

साभार – गूगल

अंतर ढूंढिए....

साभार – गूगल

THE ASSAM VALLEY SCHOOL
1995 - 2020

संपादकीय मण्डल

मुख्य संपादक : आरव जैन
सहायक संपादक मण्डल : आकांक्षित शर्मा
आवरण पृष्ठ सज्जा : अनुष्का जोशी
पृष्ठ सज्जा : आकांक्षित शर्मा
पृष्ठभूमि छायाचित्र : गूगल एवं कैनवा
फोटोग्राफ : ए.वी.एस. फोटोग्राफी सोसायटी
संकलनकर्ता : आदित्य उपाध्याय
शिक्षक मण्डल : समस्त हिंदी विभाग
मार्गदर्शक : डॉ. विधुकेश विमल

संपादकीय पता
दि असम वैली स्कूल
बालीपारा, सोनितपुर
असम - 784101

अस्वीकरण:- उड़ान पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाएँ विद्यार्थियों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हैं। विद्यालय, विद्यार्थियों की निजी अभिवयक्ति के प्रति तटस्थ भाव रखता है।